सही समझ व सही प्रयत्न :

योगवासिष्ठ से लिए गए उद्धरण

६

परम ध्यान यही है, परम पूजा यही है :
अन्तर में स्थित उस उपस्थिति का,
अन्तर-प्रकाश या चिति का निरन्तर व अखण्डित बोध होना।

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

योगवासिष्ठ; स्वामी वेंकटेशानन्द, *The Supreme Yoga: Yoga Vasishtha* [दिल्ली, भारत : मोतीलाल बनारसीदास, २०१०] पृ. २५५।